रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण चेतना

वैशालीबहन ठाकोरभाई आहीर
शोध छात्रा,
वीर नर्मद दक्षिण गुजरात यूनिवर्सिटी - सूरत

१. परिचय

रामदरश मिश्र, भारतीय साहित्य के एक प्रमुख लेखक, अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज की ग्रामीण चेतना को उजागर करने का कार्य करते हैं। उनके उपन्यासों में गाँवों की जीवनशैली, समस्याएं, और उनमें उत्पन्न चुनौतियाँ बड़े संवेदनशीलता और कल्पना के साथ प्रस्तुत की गई हैं। डॉ. रामदरश मिश्र (जन्म: १५ अगस्त, १९२४) हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। ये जितने समर्थ कवि हैं उतने ही समर्थ उपन्यासकार और कहानीकार भी। इनकी लंबी साहित्य-यात्रा समय के कई मोड़ों से गुजरी है और नित्य नूतनता की छवि को प्राप्त होती गई है। ये किसी वाद के कृत्रिम दबाव में नहीं आये बल्कि उन्होंने अपनी वस्तु और शिल्प दोनों को सहज ही परिवर्तित होने दिया। अपने परिवेशगत अनुभवों एवं सोच को सृजन में उतारते हुए, उन्होंने गाँव की मिट्टी, सादगी और मूल्यधर्मिता को अपनी रचनाओं में व्याप्त होने दिया जो उनके व्यक्तित्व की पहचान भी है। गीत, नई कविता, छोटी कविता, लंबी कविता यानी कि कविता की कई शैलियों में उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा ने अपनी प्रभावशाली अभिव्यक्ति के साथ-साथ गजल में भी उन्होंने अपनी सार्थक उपस्थिति रेखांकित की। इसके अतिरिक्त उपन्यास, कहानी, संस्मरण, यात्रावृत्तांत, डायरी, निबंध आदि सभी विधाओं में उनका साहित्यिक योगदान बहुमूल्य है।

२. प्रारंभिक जीवन

डॉ॰ रामदरश मिश्र का जन्म हिन्दी तिथिनुसार श्रावण पूर्णिमा गुरुवार को गोरखपुर जिले के कछार अंचल के गाँव डुमरी में हुआ था। इनके पिता का नाम रामचन्द्र मिश्र और माता का नाम कमलापति मिश्र है। ये तीन भाई हैं स्व॰ राम अवध मिश्र, स्व॰रामनवल मिश्र तथा ये स्वयं, जिनमें ये सबसे छोटे हैं। उनसे छोटी एक बहन है कमला। मिश्र जी की प्रारंभिक शिक्षा मिडिल स्कूल तक गाँव के पास के एक स्कूल में हुई। फिर उन्होंने ढरसी गाँव स्थित 'राष्ट्रभाषा विद्यालय' से विशेष योग्यता बरहज से 'विशारद' और साहित्यरत्न की परीक्षाएँ पास कीं। १९४५ में ये वाराणसी चले गये और वहाँ एक प्राइवेट स्कूल में साल भर मैट्रिक की पढ़ाई की। मैट्रिक पास करने के पश्चात ये काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से जुड़ गये और वहीं से इंटरमीडिएट, हिन्दी में स्नातक एवं स्नातकोत्तर तथा डॉक्टरेट किया। सन् १९५६ में सयाजीराव गायकवाड़ विश्वविद्यालय, बड़ौदा में प्राध्यापक के रूप में उनकी नियुक्ति हुई। सन् १९५८ में ये गुजरात विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हो गये और आठ वर्ष तक गुजरात में रहने के पश्चात १९६४ में दिल्ली विश्वविद्यालय में आ गये। वहाँ से १९९० में प्रोफेसर के रूप में सेवामुक्त हुए।

३. साहित्यसेवा

रामदरश मिश्र हिन्दी साहित्य संसार के बहुआयामी रचनाकार हैं। उन्होंने गद्य एवं पद्य की लगभग सभी विधाओं में सृजनशीलता का परिचय दिया है और अनूठी रचनाएँ समाज को दी है। चार बड़े और ग्यारह लघु

उपन्यासों में मिश्र जी ने गाँव और शहर की जिन्दगी के संश्लिष्ट और सघन यथार्थ की गहरी पहचान की है। मिश्र जी की साहित्यिक प्रतिभा बहुआयामी है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना और निबंध जैसी प्रमुख विधाओं में तो लिखा ही है, आत्मकथा- सहचर है समय, यात्रा वृत्त तथा संस्मरण भी लिखे हैं। यात्राओं के अनुभव तना हुआ इन्द्रधनुष, भोर का सपना,घर से घर तक, देश-यात्रा तथा पड़ोस की खुशबू में अभिव्यक्त हुए हैं।मिश्र जी ने छहसंस्मरण पुस्तकें लिखी हैं - स्मृतियों के छन्द, अपने-अपने रास्ते, एक दुनिया अपनी, सहयात्राएँ, सर्जना ही बड़ा सत्य हैऔर सुरभित स्मृतियाँ ।उन्होंने अपनी संस्मरण पुस्तक स्मृतियों के छन्द में उन अनेक वरिष्ठ लेखकों, गुरुओं और मित्रों के संस्मरण दिये हैं जिनसे उन्हें अपनी जीवन-यात्रा तथा साहित्य-यात्रा में काफी कुछ प्राप्त हुआ है। हिंदी के प्रसिद्द रचनाकारों के संस्मरण 'सुरभित स्मृतियाँ'संकलित हैं जोकि कोरोना काल में लिखे गए । ये रचना-कर्म के साथ-साथ आलोचना कर्म से भी जुड़े रहे हैं। उन्होंने आलोचना, कविता और कथा के विकास और उनके महत्वपूर्ण पड़ावों की बहुत गहरी और साफ पहचान की है।'हिन्दी उपन्यास : एक अंतयात्रा, 'हिन्दी कहानी : अंतरंग पहचान', 'हिन्दी कविता : आधुनिक आयाम', 'छायावाद का रचनालोक' उनकी महत्त्वपूर्ण समीक्षा-पुस्तकें हैं।

४. काव्य

मिश्र जी ने अपनी सृजन-यात्रा कविता से प्रारंभ की थी और आज तक ये उसमें शिद्दत से जी रहे हैं। उनका पहला काव्य संग्रह 'पथ के गीत' १९५१ में प्रकाशित हुआ था। तब से आज तक उनके मुख्य पंद्रह कविता संग्रह आ चुके हैं। ये हैं - "बैरंग-बेनाम चिट्ठियाँ', 'पक गयी है धूप', 'कंधे पर सूरज', 'दिन एक नदी बन गया', 'जुलूस कहां जा रहा है', 'आग कुछ नहीं बोलती', 'बारिश में भीगते बच्चे और 'हंसी ओठ पर आँखें नम हैं', (गजल संग्रह)- 'ऐसे में जब कभी', आम के पत्ते, तू ही बता ऐ जिंदगी (ग़ज़ल संग्रह),हवाएँ साथ हैं (ग़ज़ल संग्रह),कभी-कभी इन दिनों, धूप के टुकड़े, आग की हँसी, लमहे बोलते हैं, और एक दिन, मैं तो यहाँ हूँ, अपना रास्ता, रात सपने में, सपना सदा पलता रहा(ग़ज़ल संग्रह), पचास कविताएँ, रामदरश मिश्र की लंबी कविताएँ, दूर घर नहीं हुआ (ग़ज़ल संग्रह), बनाया है मैंने ये घर धीरे धीरे (ग़ज़ल संग्रह) नवीनतम काव्य संग्रह है। रामदरश मिश्र ने समय-समय पर ललित निबंध भी लिखे हैं जोकि कितने बजे हैं, बबूल और कैक्टस, घर-परिवेश, छोटे-छोटे सुख, नया चौराहा में संग्रहीत हैं । इन निबंधों ने अपनी वस्तुगत मूल्यत्ता तथा भाषा शैलीगत सहजता से लेखकों और पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। मिश्र जी ने देशी यात्राओं के अतिरिक्त नेपाल, चीन, उत्तरी दक्षिणी कोरिया, मास्को तथा इंग्लैंड की यात्राएँ की हैं।

५. कृतियाँ

काव्यः पथ के गीत, बैरंग-बेनाम चिट्ठियाँ, पक गई है धूप, कन्धे पर सूरज, दिन एक नदी बन गया, मेरे प्रिय गीत, बाजार को निकले हैं लोग, जुलूस कहाँ जा रहा है?, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, आग कुछ नहीं बोलती, शब्द सेतु, बारिश में भीगते बच्चे, हँसी ओठ पर आँखें नम हैं (ग़ज़ल संग्रह), ऐसे में जब कभी, आम के पत्ते, तू ही बता ऐ जिंदगी (ग़ज़ल संग्रह),हवाएँ साथ हैं (ग़ज़ल संग्रह),कभी-कभी इन दिनों, धूप के टुकड़े, आग की हँसी, लमहे बोलते हैं, और एक दिन, मैं तो यहाँ हूँ, अपना रास्ता, रात सपने में, सपना सदा

पलता रहा(ग़ज़ल संग्रह), पचास कविताएँ, रामदरश मिश्र की लंबी कविताएँ, दूर घर नहीं हुआ (ग़ज़ल संग्रह), बनाया है मैंने ये घर धीरे धीरे (ग़ज़ल संग्रह)।

उपन्यासः पानी के प्राचीर, जल टूटता हुआ, सूखता हुआ तालाब, अपने लोग, रात का सफर, आकाश की छत, आदिम राग,बिना दरवाजे का मकान, दूसरा घर, थकी हुई सुबह, बीस बरस, परिवार, बचपन भास्कर का, एक बचपन यह भी, एक था कलाकार।

१. **ग्रामीण जीवन का चित्रण:** रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का विविध और संवेदनशील चित्रण होता है। उनके कल्पनाशील शैली से गाँवों की सामाजिक और सांस्कृतिक जीवनशैली को समर्थन मिलता है और यह पाठकों को गाँवी क्षेत्रों की अनछुए रंग-बिरंगी दुनिया में ले जाता है। 'रामदरश मिश्र के उपन्यासों' में ग्राम्य जीवन को अपने अध्ययन का विषय बनाया। इस विवेच्य ग्रंथों में सामाजिक विचार, सामाजिक रीत - रिवाज, जाति धर्म मानवता सम्बन्धों का तनाव, आदि छोटी से छोटी बातों का चित्रण किया गया है। मिश्रजी के उपन्यासों में विशेषकर बाह्य परिस्थितियाँ, जमीदारी, सामंतीप्रथा, ग्रामीण धार्मिक जीवन, श्रमिक मजदूर और विनोद वृत्ति, पूंजीवादी व्यवस्था, विधवा विवाह, वेश्या समाज का चित्रण - संस्कार को प्रकाशित किया है। रामदरश मिश्र के उपन्यासों का वस्तुगत संगठन देखने को मिलता है ।।
२. **ग्रामीण समस्याएं:** उनके उपन्यासों में ग्रामीण समस्याओं का सूक्ष्म विश्लेषण होता है। उन्होंने गाँवों की गरीबी, शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं की अभाव, और अन्य समस्याएं उजागर करते हुए समाज को सोचने पर मजबूर किया है।
३. **समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण:** रामदरश मिश्र अपने उपन्यासों में ग्रामीण समाज को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी देखने का प्रयास करते हैं। उनके लेखों में सामाजिक विभाजन, जातिवाद, और ग्रामीण समाज के विकास के संबंध में विचार किया जाता है।
४. **चरित्र निर्माण:** रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चरित्र निर्माण एक महत्वपूर्ण पहलु है। उनके चरित्र ग्रामीण जीवन की सटीक छवि को प्रस्तुत करते हैं और पाठकों को उनकी जीवनी में सहानुभूति बढ़ाते हैं।
५. **समापन:** रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण चेतना का विश्लेषण करते समय, हम देख सकते हैं कि उनकी रचनाएं ग्रामीण समाज के प्रति उनके संवेदनशील दृष्टिकोण को दर्शाती हैं और उन्होंने ग्रामीण चेतना को समृद्धि दिलाने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित किया है। इस आर्टिकल को आगे बढ़ाने के लिए आप रामदरश मिश्र के विभिन्न उपन्यासों से उदाहरणों का उपयोग कर सकते हैं और इन्हें और विस्तारित रूप से विश्लेषण करके उनके साहित्यिक योगदान को समझा सकते हैं।

रामदरश मिश्र, एक उच्च गुणवत्ता वाले हिंदी साहित्यकार और लेखक, ने अपनी रचनाओं के माध्यम से ग्रामीण जीवन की चेतना को सुलझाया है। उनके उपन्यासों में ग्रामीण चेतना का विशेष उजागरण है जो सामाजिक समस्याओं, सांस्कृतिक विरासत, और गाँवों के जीवन की सच्चाई को छूने का प्रयास करता है।

१. **सांस्कृतिक समृद्धि:** रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण चेतना का पहला पहलु सांस्कृतिक समृद्धि पर है। उनके लेखों में गाँवों की ऐसी समृद्धि को उजागर किया गया है जो उनकी शृंगारी भाषा और

कल्पनाशीलता से भरी हुई है। उन्होंने गाँवी सांस्कृतिक परंपराओं को मजबूती से प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक गाँव की अनूठी धरोहर को समझ सकते हैं।

२. **सामाजिक समस्याएं:** रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण चेतना का अन्य महत्वपूर्ण पहलु सामाजिक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करना है। उनके कल्पनाशील चरित्रों के माध्यम से, उन्होंने गाँवों में जैसी समस्याएं हो सकती हैं उन्हें सुगमता से प्रस्तुत किया है। इससे पाठक सामाजिक अन्याय और जनजीवन की चुनौतियों को समझ सकते हैं।

३. **पर्यावरणीय दृष्टिकोण:** रामदरश मिश्र ने अपने उपन्यासों में ग्रामीण चेतना का एक और पहलु पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर रखा है। उनके लेखों में गाँवों के प्राकृतिक सौंदर्य, वन्यजीव, और पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर उनके विचार प्रस्तुत होते हैं।

४. **आत्मनिर्भरता और विकास:** रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण चेतना का और एक महत्वपूर्ण पहलु है आत्मनिर्भरता और विकास की बात करना। उनके कथानकों में गाँववालों को स्वावलंबी बनने के लिए प्रेरित किया गया है और उन्होंने गाँव के विकास के लिए नई दिशाएं दिखाई हैं।

५. **गहरा चित्रण और भाषा:** रामदरश मिश्र की ग्रामीण चेतना में एक और महत्वपूर्ण विशेषता है उनके गहरे चित्रण और रसभरी भाषा की। उनकी रचनाओं में गाँव के सभी पहलुओं का सुंदर और व्यावसायिक चित्रण है जो पाठकों को गहरी अनुभूति प्रदान करता है।

सारांश

रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण चेतना का संपूर्ण चित्र यह है कि वह एक अद्वितीय तरीके से गाँव की सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक जीवनशैली को समझने का प्रयास करते हैं। उनकी रचनाएं पाठकों को गाँव के अदृश्य विश्व के साथ मिला देती हैं और उन्हें ग्रामीण चेतना की महत्वपूर्णता से परिचित कराती हैं।

सन्दर्भग्रंथ

१. गोस्वामी, यशवंत (२००५). रामदरश मिश्र के उपन्यासों में गृह- परिवार, नया साहित्य केंद्र, दिल्ली

२. यादव, सूर्यदीन (२००५). रामदरश मिश्र की कवितारू सृजन के रंग शांति पुस्तक भंडार, दिल्ली

३. वैश्य, सीमा (२००४). रामदरश मिश्र के उपन्यासों की वैचारिक पृष्ठभूमि. सत्यम पब्लिशिंग हाउस

४. शर्मा, ममता (२००२). रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्राम चेतना (जल टूटता हुआ' के संदर्भ में) राष्ट्रीय ग्रंथ प्रकाशन गांधी नगर